अरूट पेरूम्जोति   अरूट पेरूम्जोति

तनिप्पेरूम्करूणै   अरूट पेरूम्जोति

तिरू अरूट प्रकास-वल्लार का जीवन कथा ।

गाँव, माता पिता, और जनन ।

तमिल नाडु, कडलूर जिले के अन्दर सिदम्बरम नाम का एक पुण्य क्षेत्र है। वहाँ से दस मील उत्तर पूर्व में मरूदूर नाम का एक छोटा सा गाँव में अडिगल का जन्म हुआ था । अडिगलार का माता पिताओं इरामैया पिल्लै मरूदूर गाँव का खेतिबाडियाँ का हिसाब किताब लिखने का काम करता था। गाँव का मुख्य प्रमुख थे । साथ साथ बच्चों को सबक सिखाना (अध्यापक) यह काम भी करता था । चिन्नम्मैयार चेगंल्पट्ट जिले, पोन्नरि के पास 'चिन्नकावणम" गाँव में जन्म हए । उन्हें इरामैया मिल्लै को छः वाँ बीबी थी । पाँचों बीबीयों को बिना बच्चे मर गये । इन्को 1) परसुरामन, नामक दो लडकें और 1) उन्णामलै 2) सुन्दराम्आल नामक दो लडकियाँ ने जन्म हए ।

1823 वर्ष, अक्तूंबर महिने में 5 तारिख, सुबानु (तमिल वर्ष) पुरट्टासि महिने, 21 ताखि इत्वार शाम 5,30 बजे में अडिगल ने (पाँचवाँ) बच्चा जनन हुआ था । इन्का माता पिता ने इनका "इरामलिगंम" करके नाम रखा ।

सिदम्बर का दर्शण ।

जब बच्चा फायदा होता है फौरन (उसी वक्त) बच्चे को मन्दिर को ले जाकर, आने का आदद थी । उसी तरह अडिगलार पाँच महिने बच्चे में सब भई बहन के साथ सिदम्बरम जाकर के प्रार्थना किये । "सिर्सबै" में नटराज परमाथ्मा को प्रार्थना करने के बाद सब-लोग सिदम्बर रहस्य दर्शन के लिए उसके साम्ने आकर खडे हो गये । माता जी के हाथ में बच्चा इरामलिगंम थे । पन्डित ने स्कीन कपडा को निकाला तो सिदम्बर रहस्य दिखाई दिया । सब लोग दर्शन किये । बच्चा इरामलिंगम अडिगलार भी दर्शन किये । जिस दर्शन सब लोगों मालूम हुआ । खुदा ने रहस्य को अच्छी तरह दिखाकर आर्शीवाद किए । इस तरह एक स्की में ही अडिगल पूर्वज्ञान से सिदम्बरम तिल्लै में अपना अनुभव को देखा । उसीको अपना उन्वास (49)वाँ उम्र में उत्तर ज्ञान सिदम्बरम वडलूर सथ्य ज्ञानसभा में साथ (7) स्कीन कपडों को निकालकर (प्रकाश ओलि) ज्योतिको दिखाया ।

परिवार चेन्नै को जाना ।

आठवाँ महिने में इरामैया पिल्लै का मौथ हो गई । उस्के बाद सिन्नम्मैयार ने बच्चो के साथ अपना गाँव पोन्नेरि को चली गयी । कुछ काल के बाद सब लोग चेन्नै को चले गये । बडा बच्चा सबापति पिल्लै ने कान्जीपुरम विद्वा सीखने लगा । फिर उन्हे पुराण, उपन्यास में अच्छे पन्डित बन्कर अपना परिवार को चलाता था।

बिना पढाई से ही (ज्ञान) सब कुछ मालूम होना ।

जब बच्चा इरामलिंगम को स्कुल जाने का उम्र हुआ था, उनका भाई सबापति मिल्लै खुद सबक सिखाने लगा । बाद में उन्का अध्यापक कान्जीपुरम महा विद्वान सबापति मुदलियार के पास ही सीखने के लिए भेजा । छोटा इरामलिंगर का बुध्दि, पक्व और उनका कवि के साथ कन्द कोट्टम प्रार्थना, यह सब देखकर उन्हैं बिना कोई सिखते और तभी सिखाना भी बन्द कर दिया । बडिगलार ने कोई भी पाठशाला में पढाया नहीं । किसी भी अध्यापक के पास सीखा नहीं । सब कुछ भगवान सेही ले लिया । सब (पूरा) ज्ञान भगवान नेदे दिया था । थोडी सी भी अध्यापक से नहीं । भाई ने अडिगलार को कोई भी पाठशला में भर्ति नहीं किया । भगवान खुद सब कुछ दे दिया । "पेरू विण्णप्पम" में बिना कोई अध्यापक, मेरे को सब कुछ भगवान ने देकर, मेरे बदन के अन्दंर सदा वक्त रहकर, पूरा रहस्य को बता दिया । पूरा वेद, पूरा कलायें को मैं जान्ता हूँ । अन्दर्मुख से प्रकाश को मेरे को दिया य पिछले जन्म में ही सर्यै, किर्यै, योगाओं को सीखकर, इस जन्म में ज्ञान को लेकर, सिध्दि लेने के लिये जन्म लिया हुआ "सामुसिध्दर" । इस्लिये बच्मन में ही बिना पढाई से पूरा ज्ञान को ले लिया था । तिरूक्कुरल.398 ओरूमैकण .... यह अडिगलार को पूरा बराबर है ।

खेलखूद का उम्र में कवियों बनाना शुरू करना ।

गलियों में खेलने का समय में ही अडिगलार ने ज्ञान विषय में ही कवियाँ बनाकर गाता था । शकल में छोटा, छोटा पैर के साथ खेलने के समय अच्छा बुध्दि देख रके आपको गाने अनाया । गाने का नियति कुछ भी मालुम नहीं था । फिर भी एक एक को माला जैसा गाने का सुक्ष्म को मालूम कर लिया था । माचँ बुध्दियों में, बिना अनुभव रोकर, आनन्द से खेलना, बुध्दि में अच्छा लोग खुशी होने के लिये आपको गाकर, इच्छा से अरूल रास्ता में चलने दिया । "छोटा बच्पन में ही मेरे को लेकर (अंज्ञान उम्र में) प्यार भाषा में गाने को किया एक ही "ऐसा उम्र में आपको अपना पेम्मान करके गाने को रास्त दिया हुआ खुदा ।" जब गलि में खेलने का उम्र बडे उम्र करके

आक्ष्चर्य से दिये ज्योति में ध्यान के साथ बनाया हुआ माला को पहने हुए मेरा राजा यह सब अडिगलार का मन के अन्दर कामों का उधरणें हैं ।

कन्द कोट्ट प्रार्थना ।

बच्पन में पाठशला जाकर सीखा नहीं, घर में भी रहता नहीं, घुमता अडिगल हर दिन कन्द कोट्टम को जाना और प्रार्थना करना यह आदत थी । "दैव मणि मालै" "कन्दर चरा पत्तु" यह दो किताबें अडिगलार ने कन्द कोट्टम में गाया था । पहले पहले पहले अडिगलार प्रर्थना उधरी थी । पहला कवि "देव मणिमालै" और उसका पहला वार्ता "तिरू ओन्गु" था । उसके बाद ही उस जगह प्रसिध्द हुआ । आज का जैसा दिनों में नहीं था । आज सब कुछ ज्ञान का जगह हो गया करके मणि तिरूनावुक्करसु मुदलियार ने लिखाया । पहले सिर्फ कन्दसामि कोइल करके नाम था । बाद में आडिगलार ने ही "कन्द कोट्टम" करके नाम रखा ।

ऐनक में दर्शन लेना ।

अपने पास या अपना गुरू महा विद्वान सबापति मुदलियार के पास पाठ पढाया नहीं, औरध्घर में भी न रहते हुए मन्दिरों में घूमकर गाना गाकर के दिन चलाना, उन्का भाई सबापति पिल्लै को थोडा भी बह सुनेगा नहीं । इसलिए इस्के बाद भाई इरामलिंगम को घर में रवाना नहीं (मत) देना करके अपना बीबी के पास बता दिया ।

यह बात पेरूमान को अच्छा हो गया । अपने दोस्तों के सात मन्दिरों में ठहरकर गाना बगैयरा के साथ अपना प्रार्थना को करते हुए दिन भर घर को ही तरफ और इरामलिंगर को भी छोडने को दिल नहीं होते हुए किसी बालक को बुलाकर जब भाई ने बाहर चले जाते हैं उस क्कत घर आकर खाना खाकर जाने के लिए बतायी । पेरूमान भी उसी तरह घर आकर अपना खाना खकार के जाता था । कुछ दिन में यह बात सबापति पिल्लै को मालुम हुआ, फिर भी वह छुप हो एया । इसी तरह बहुत दिन गुजर गये ।

एक दिन अपना पिताजी का तिति आया तो घर में सब खाना वगैयरह, बहुत अच्छी तरह था । उस वक्त अपना भाई का याद आकर दिल रोया और वह रोज घर आकर खाना खाकर जाता है करके मालूम होकर दिल तसली हो गया था । पेरूमान ने शाम में घर आया था । उस वक्त बाबी ने खाना दिया तो पेरूमान ने खानें शुरू किया । उस समय अपना बाबी ने रोयी । पेरूमान ने रोने का कारण पूछने लगा । तो बाबी ने बताई अपना भीई ने जो बोलता है उस्को सुन्कर अच्छी तरह रहने से ऐसा क्यों चोर के तरह रहना । इस्लिये मैं रोती हूँ, करके बोली । इस्के बीच बहुत आसूँ निकल गये । बाबी का आसूँ देखकर पेरूमान ने कल से मैं घर में ही ठहरकर पडुगाँ करके बोला और उसी तरह अगला दिन पेरूमान ने घर आ गये थे ।

अपना पसन्द से उस्को घर के मंजिल में एक कमरा दे दिये । अपने पसन्द के अनुसार, कुछ पूजा का सामान और किताबों को लेकर कमरे में गुस्गये । कमरे का दर्वाजा न्श्ध करकर "मुरूगर" पूजा में ध्यान रख दिया । सिर्फ के वक्त कमरे से बाहर आता था । बाकी वक्त बाहर नहीं आता था । नींध भी उधरी करता था । इस्तरह ध्यान के समय एक दिन दीवार में जो ऐनक था उसमें "मुरूगन" (खुदा) ने अपना दर्शन दिया । "सीर कोण्ड दैव, वदनगल आरूम" यह गाना उसी को बताती है ।

बच्पन का उपन्यास । (प्रसंग)

भाई सबापति पिल्लै के साथ एक दो दिन पुराण से प्रसन्ग करते समय किताब पढा सोमु चेट्टियार का घर में हर दिन जो प्रसन्ग होगा, वह एक दिन भाई बा बीमारी के कराण रूखावट हुआ था । इसलिए अपना भाई इरामलिगर को बुलाकर चेट्टियार के पास जाकर बीमारी का खबर बताकर एक दो गानें गाकर प्रार्थना को खतम करके आने के लिए भेजा था । उसी तरह पेरूमान भी सोमु चेयिार का घर जाकर गाना गाकर उपन्यास किये । सभा में जो थे वे लोग हर हिन पेरूमान को ही आकर प्रसंग करने को बोला । अडिगलार भी तिरूज्ञान सम्अन्धर का पुराण से रात बहुत देर तक बताया । तो सब लोग ही का प्रसन्ग को पसन्द किये । पेरूमान भी कुछ दिन बात किये । भाई के साथ जो पढा वह, और बच्पन का प्रसन्ग, यह दोनों लोगों को पसन्द होकर "अडिगलार" के पास भय और भवित के साथ रहने लगे ।

नौवाँ (9) उम्र में भागवान ने अडिगलार को ले जिया ।

भगवान ने अडिगलार को नौवाँ 9 उम्र में अपने पास लेलिया । "येन्नै आन्डारू मून्रण्डिल आण्डु कोण्ड अरूटकडले, " आरोडु मून्राण्डावदिले मुन्नेन्नै आन्डाय" ये उन्का अन्तर यामिक नमूनायें । "येन्नै आरिया परूवत्ते आन्डु कोन्ड येन गुरूवे," "येन्नै सिरू कालै आटकोन्ड देवदेवे," "येनै अरिया इलम्परूवन्तनिले परिन्दु वन्दु मालै इट्टान." "एदुम ओन्ररिया पेदैयाम परूवत्तेन्नै आटकोन्डु" "तेरूविडत्ते विलैयाडिड त्तिरिन्द येनै वलिन्दे सिव मालै अणिन्दनै, अटमुम मरैप्पुम अरिविलादोडि आडिय सिरू परूवत्ते कुटमुम गुणंकोन्डेन्नै आठकोन्ड गुणप्पेरू कुन्रमे इन से हमको हमको भगवान बच्पन में ही अडिगलार को लेलिया करके मालूम होता है ।

बारह (12) वाँ उम्र में ज्ञान आरम्भ हुआ ।

“पनिरण्डाण्डु तोडन्गि नान इटैपगल वरै अडैन्दवै येल्लाम,” “पनिरण्डाण्डु तोडन्गि इटैपगलिन वरैयुमे वरैयुमे” “ईराराण्डु तोडन्गि इटैपगलिन वरैयुमे” ये बातों में से हम्को, जो ज्ञान मिला था उस्को बताते हैं ।

प्रार्थना खुदा, गुरू, किताब ।

प्रार्थना खुदा	-	मुरूगप्पेरूमान
गुरू	-	तिरूज्ञान-सम्बन्ददा । और
किताब	-	तिरूवासगम ।

ऐसा पेरूमान का आदद में ले लिया ।

जवाब न मिलने के कारण यह बात अडिगलार के पास ले आये । तब अडिगलार ने “तोण्ड मण्डलम” का शब्द ही ठीक है करके बताया और “नूर्पेयर इलक्कणम” का हेडिग (Heading) में लिखकर “तोण्ड मण्डल सदगम” के साथ मिलाकर ‘राटशण वर्ष,” “मार्गलि महिने 1855 में पब्लिष किये । नूर्पेरिलक्कणम को दो भागों में (लेना, मना करना) बहुत खुब किया हुआ है । इन्में जो शब्दों प्रयोग किये हुए हैं वे बडे बडे पण्डितों भी बडे आश्चर्य होते हैं ।

आतोण्ड च्चकवर्ति ने जब वह राजा थे उस समय बनाये हुए मन्दिरों में मूर्तियाँ पर अपना नाम भी लिखकर रख्ते थे । इस्को “तिरूवलिदायम,” “तिरूमुल्लैवाइल ऐसे शिव स्थलों में जाकर देख सेख्ते हैं । इन जगह में मत्थरों पर अच्छी तरह जिख हुआ है । (तोण्ड मण्डलम) अडिगलार मन्दिरों में जाने से मन्दिर का बनावट, मूर्थियाँ और मत्थर में जो जखिा हुआ थे सब्को अच्छी तरी बहुत देर देखेगा । उस वक्त का शष्रियाँ भी ग्राफि (Graphy) “ओलाजी” (Archaeology) या आसन के बारे में चिन्ता नहीं करते । शसन और ओलाजी (Epigraphy & Archaeology) यह दोनो को युरोप देश वाले ने हम को दिया । ये हम को बहुत बडे बोक्किष हैं । 19 सेन्चुरि (Century) के बीच गवर्नमेण्ट (Government) ने (युरोप वाले) हम को दिया ।। तमिले पण्डित भी कोइे इस के बारे में चिन्ता नहीं किये मगर अपना वल्ललार ने ये सब जान्कारी थे । इन्का जो कठिन प्यास (मालूम होने के लिए) बहुत तारिफ की बात है । यही तमिलनाडु में ये सब मे प्रथम थे ।

अडिगलार ने “तोण्डमण्डल सदगम” को शरत्र किताब बनाये और नूर्पेयर इलक्कणम के बाद में “वलिपडु कडवुल वणक्कप्पाट्टै” का हेडिंग में तैयार किया हुआ है । अडिगलार का तोण्डमण्डलसदगम पब्लिकेशन में “कांजिपुरम महा विद्वान सबाबमि मुदलियार,” “पुरसै अट्टावदानम सबाबति मुदलियार,” “पुदुवै सुब्बराय पुदलियार,” “विरूद्दाचलम कवि तियागराजर” ये चारों नमूना कवि दिया हुआ है ।

“कांजिपुरम महा विद्वान सबाबति मुदलियार अपना कवि में पलकलै तेरिदरूम उणर्चियन, सिवनरूल पुनैयुम मारूरू अंबन, मनामसु अगन्रोन, तेरूवार उलत्तु तिगलंदयन मुदलोर तेरिदर्करिय सिदम्बरनगरिल परिवुरू पुलमै पण्बन इरामलिंगम येनुम मेयरोने (यह जो उपर दिया हुआ वार्ते को कोइ तमिल पण्डित से अर्थ मालूम कर लेना ।) करके खूब लिखा हुआ है ।

सिन्मयदीबिगै -1857

विरूद्दाचलम कुमारदेवर मडम “मुत्तैयस्वामिगल” का लिखा हुआ “सिन्मयदीबिगै” को पिन्गालवर्ष, कार्तिगै तिन्गालिल (1857) में महला पबिलकेशन किया हुआ हैं ।

नूल्गल इयट्रल

जिन्दगि का जरूरत अर्थ विवरण से किताब नहीं था । उस समय मनुमरै कण्डवासगम, और जीवकारुण्यओजुक्कम ये दोनों लिखकर दिये । “मनुमुरैकण्डवासगम” और जीवकारुण्यओजुक्कम” के दानों को लिखकर दिये । “मनुमुरैकण्डवासगम” 1854 और जीवकारूण्यओजु कम अडिगलार सिध्द के बाद 1879 में प्रिण्ट हुआ था ।

साट्रक्कवि अलित्तल ।

उस जमाने में किताब लिखने वालों बडे वडे पण्डिटों से साट्रकवि (उस किताब के बारे में थोडा बहुत लिखकर देना) लेना आदत में था । अडिगलार से भी बहुत लोग लिया हुआ है । मुत्तु कष्णब्रमम “निट्टानुबूदि” पर जो अर्थ लिखा, मदुरे आदीनम सिदम्बरस्वामिगल का पब्लिकेशन “सिदम्बर पुराणम,” “मायूरम मुन्सिप” वेदनायगम पिल्लै का नीदि किताब ये सबको अडिगलार का शस्त्रियाँ का कवियों को “पल वगैयतनि पाडल्गल” ऐसे हेडिंग में देख सखते हैं । “वेदनायगम पिल्लै का किताब में अडिगलार का लिख हुआ अर्थ शास्त्र”

चेन्नपट्टणम विद्वान शींमान इरामलिगम मिल्लै अवर्गल इयद्वियदु ऐसा पब्लिष किया हुआ है । इस में से “अडिगलार” चेन्नै में बडे विद्वान भी थे करके हम को मालूम पढता है ।

चेन्नै को चोडना - 1858

बहुत बडी भीड का आवाज के साथ चेन्नै में रहना और अपना परिवार के साथ घर में रहने के लिए भी इच्छा नहीं था । चेन्नै में ही रहने से बाद में कष्ट आयेगा करके, अपना 35 उम्र में (1857) एक दिन चेन्नै छोडकर यात्रा स्थलों जाकर आखिर में “तिल्लै” पहुंचे ।

करून्गुजि में ठहर्ना । (1858-1867)

एक दबह करून्गुजि ग्राम मुन्सिप वेन्गडरेडडियार अडिगलार को तिल्लै में देखकर, अडिगलार को अपने गाँव को आने के लिए बोला तो अडिगलार ने करून्गुजि को आ पहुँचा । वेन्गडरेड्डियार अपना घ में ही अडिगलार ठहने को पूछ लिया था । रेड्डियार को सही दिल था । यह मालुम होकर अडिगलार भी उन्कर घर में ही ठहर गया । 1858 से 1867 तक वे करून्गजि में ही थे । 1867 में वडलुर में धर्म शला बनाने के बाद अडिगलार बार बार सिदम्बर जाने लगा । “तिरूमुदुगुन्रम” “तिरूवदिगै, “तिरूवण्णमलै” ऐसा जगहों को जाकर प्रार्थना । किये “करून्गुजि” में रहने के समय सिदम्बरदर्शन का प्रार्थना का समय करके बोल सक्ते हैं । 4 वाँ और 6 वाँ तिरूमुरै यह दोनों को इस समय में लिखा था । (शरू कि कुछ भाग 6 वाँ तिरूमुरै ।)

पानि से दीप जलाना ।

करून्गुजि घर में एक रात अडिगलार लिखने के समय तेल समज्कर पानि रातको दीप में डाला तो दीप भी पूरा जला था । इस अचम्भा को अडिगलार ही एक गाने में दिया हुआ है । “मदुरैअदीनम सिदम्बरस्वामि” ने भी “तिरूअरूटपा” में इस बडाई को खूब विवरण से लिखा हुआ है ।

तिरूवोद्वियूर प्रार्थना ।

प्ररूमान का 12 वाँ उम्र में ज्ञान का जिन्दगि को ठीक तरह हर दिन तिरूवोद्वियूर जाकर तियगपेरूमान और वडिवुडै अम्मन दोनों को प्रार्थना करते थे । प्ररूमान का 35 वाँ उम्र तक (तेईस वर्ष) वोद्वियूर में प्रार्थना कर रहे थे । पहला तिरूमुरै में वडिवुडै माणिक्क मालै और इन्गिदमालै, दूसरा तिरूमुरै में ज्यादा भाग और तीसरा तिरूमुरै पूरा वोद्वियूर में पेरूमान ने गाते थे । पाँचवाँ तिरूमुरै में तिर्थना करके, और चेन्नै में रहकर भी गाया हुआ गाने हैं । बीच बीच में तिरूवलिदायम, तिरूमुल्लैवाइल ऐसा पुण्य स्थलों को जाकर गाथे थे ।

एक दिन वोद्वियूर जाकर बहुत देर के बाद घर आकर में बूखा से ही लेट, गये । तब वडिवुडै आम्मैं ने अपना बाबी का रूप में आकर खाना खिलायी ।

वेलायुदनार ने पेरूमान का शिषय हुआ ।

1849 वाँ वर्ष में तोलुवूर वेलायुद मुदलियार ने अडिगलार के पास आकर विद्यार्थी बना । तब आडिगलार के पास आकर विद्यार्थी बना । तब अडिगलार का उम्र 26 और वेलायुदनार का उम्र 17 था । अडिगलार का वल्ल्भ में बिना इच्छा वेलायुदनार खुद 100 गानाओं कठिन शब्द के साथ बनाकर पेरूमान के मास देकर ये सब बहुत पुराने सन्ग काल का है । पुराना कागलों में से मिला करके बोला । तब अडिगलार ने उसको देखकर, ये गानाओं संग काल का नहीं । अगर ये सब संग काल का होता तो इतना गल्तियाँ नहीं रहेगा । इस गानाओं को कोई आना आदमी लिखा हुआ मालूम पढता है । वह जरूर अभी सीखने वाला होना चाहिये । इस्को सुनकर वेलायुदनार ने अपना गल्ती को मालूम होकर माफ माँगकर अडिगल के पास सरण हो गये ।

इस सम्भव को वेलायुदनार का लडका तिरूनागेस्वर मुदलियार और उन्का विद्यार्थियों में से एक विद्यार्थी पम्मल सम्बन्द मुदलियार ये दोनों बहुत दिनों के बार ही वह संभव ठीक और सच बात है करके बताते है ।

पेरूपन में ही पेरूमान ने तिनों इच्छाओं को पूरी तरह छोढकर लोग से अलग रहने के लिए चाहते थे । दुनिया का जिन्दगी को चाहता नहीं था । दूध पीते समय बच्पन में ही इच्छा सब मेरे से निकल गया करके बताते हैं । उन्का परिवार मे जो लोग थे वह लोगों का जबर्दस्ती और उन्कर विघि के अनुसार उस्का भाजी के साथ शादि हो गया । पेरूमान ने शादि में मन्गलनाण को दनम्माल के गले में बान्धा, मगर वह लोग बाद में एक दूसरे से बलग अलग ही रहते थे । शादि में सिर्फ मेरा हाथ दनम्माल के उपर लगा, मगर बाद में नहीं करके पुरूमान ने बता रहे है ।

चेन्नै में विद्वान जैसे रहना ।

“कन्द कोट्टम” “तिरूत्तणिगै” और तिरूवोट्टियूर को महा ज्ञान कवि अडिएल प्रसिध्द विद्वान जैसा भी रहते थे ।

सबक सिखाना ।

तोलुवूर वेलायुद मुदलियार, इरूक्कम रत्तिन मुदलियार, पोन्नेरि सुन्दरम पिल्लै, कायारू ज्ञान सुन्दर ऐयर, किरिया योग सादगर पन्डार आरूमुग ऐया, ये सब अडिगल के पास विनायगर का पुराण पूरा को सुने । इन में से वेलायुद मुदलियार उबय कलानिधि बडे कवि का पदक लेकर नाम लिया । तिरूवरूटपा को बाहर छोडा । बहुत किताबों लिखा । अडिगल का सिध्दि के बाद चेन्नै प्रसिडेन्सी कालेज में तमिल अध्यापक जैसा रहा । इरूक्कम रत्तिन मुदलियार भी अध्यापक हो गये । वीरासामि मुदलियार कुछ मुख्य किताबों को लिखा । सुन्दरम पिल्लै पुराण उपन्याय करकर प्रबल्य होकर “पुराणिगर पोन्नेरि सुन्दरम पिल्लै” करके नाम लिया था । इस तरह अडिगल बडे बडे किताबों में से प्रसंग करकर छोटे छोटे बच्छों को अच्छे अच्छे नीदि सिखाते थे ।

किताबों को प्रिंट करके बाहर करना ।

“ओलिविलोडुक्कम,” “तोन्ड मन्डल सदगम” “सिन्मय दीबिगै” ये तीनों किताबों को अडिगलार प्रिण्ट करके पब्लिश किये ।

ओलिविलोडुक्कम -1851

काजिक्कणुडैय वल्ललार ने 1851 वर्ष में ओलिविलोडुक्कम लिखा था । उस्को सिदम्बरस्वामिगल ने अर्थ लिखा । “वल्लल गुरूरायन वादु वेन्र सम्बंदन” काके शुरू होने वाला पाठ को सिर्फ 15 पेज में अर्थ के साथ बनाकर, अपना किताब में शामिल किया हुआ है । इस में अडिगल सुन्दांदि, कल्लाडम, सित्तियार, तिरूवासगम, तिरूक्कुरल, पुरप्पोरूल वेण्बा मालै, तोल काप्पियम ऐसे किताबों में से उद्यारण दिया हुआ है । सिदम्बर स्वामिगल का किताव में कठिन शब्दों को अर्थ लिखकर आसानी से मालुम करने के लिए पब्लिस हुआ है । इधर उधर कुछ जगह में लखीर खींचकर उसका विवरण दिया हुआ है । आखिर में अमैत्तुक्कोल्ल नाम पर विवरणें दिया हुआ है ।आडिगलार का 28 उम्र में इस्को पहले पहले लिखा था । इस्में और जो 1857 में सिन्मयदीबिगै को अर्थ लिखा इन दोनों में से उस्का ज्ञान के बारे में मालूम कर सक्ते हैं ।

“तोण्ड मण्डल सदगम” - 1856

उस जमाने में तोण्डमण्डल सदगम के बारे में बात निकला इसमें तोण्डमण्डलम का शब्द ठीक है, था तोण्डै मण्डलम का शब्द । इरको ठीक तरह

समरस सन्मर्ग सन्गम । (1865)

अडिगलार इस काल में “समरससन्मार्ग सन्गम” करके एक ठीक रास्ता को लोगों के लिए लिखाकर बताया ।

1) खुदा एक ही है । सच में जोति का प्रार्थना करना ।
2) जोति का अलावा बाकि जित्ना भी प्रार्थनायें हैं ये सब को छोड देना आवश्यक है ।
3) ऐसा बाकि प्रार्थना के समय जीवन का बलि देना बिलकुल गलत कै । मांस (मट्टन) बिलकुल नहीं खाना ।
4) जाति, समय य सब को दूर हटाना । इस में विश्वास नहीं रखना ।
5) कोई भी जीवन हो वह अपना जीवन समझना ।
6) दिल में जीवकारूण्य हर एक को रहना आवश्यक है ।
7) गरीबों का बुखा को खाना देना जरूरी है ।
8) प्यार ही मोक्ष घर का चाबि है ।
9) पुराण, शास्त्र यह सब आखिर का सच्छाई को नहीं बतायेगा ।
10) मरने के बाद जलाना नहीं । मिट्टि के अन्दर समादि कर देना है ।
11) उरने बाद जो क्रियायें (तिति वगैयरा) हैं उस को नहीं करना है ।

ये सब बातें अडिगलार का “समरससंमार्ग” नियति हैं । यह सब बातें को लोगें का जान्कारि कि लिए उन्होंने 1865 में “समरस सुध्द संमार्ग सत्तिय सेगम” को आरंभ किया ।

तिरूअरूट्पा पब्लिकेशन-1867

1867 वर्ष में “तिरूअरूट्पा” का चार (1 to 4) तिरूमुरैकिताबें प्रिण्ट करके पब्लिश किया हुआ था ।

सत्य धर्मशाला

अडिगलार का नीतियों में पहला सबक “जीवकारूण्यम” है । इस को दो भागों में बताते हैं ।

1) मांस (मट्टन) को मना करना और 2) बूखाओं को खाना देना । खाना देने के वास्ते वडलूर में (23.5.1867) प्रबव, वैकासि 11 तारिख “सत्य धर्मशाला” बना रखा हुआ है । इस को बनाने के बाद अडिगलार ने 1870 वर्ष तक धर्मशाला में ही रह गये ।

सिध्दि वलागम -1870

कुछ दिनों में भीड ज्यादा होने के कारण अडिगलार शान्ति के वास्ते वडलूर का, दक्षिण में दो मील दूर मर मेट्टुक्कुप्पम गाँव में जाकर ठहर गये । उस जगह का नाम सिध्दि वलागम करके वल्ललार ने नाम रखा था । सिध्दि मिल्ने का जगह है । (सिध्दि वलागम का अर्थ) 1870 से 1874 में सिध्दि लेने तक अडिगलार ने इधरि थे । इसी कमरे के अन्दर अडिगलार को सिध्दि मिला ।

सत्यज्ञानसबै -25.1.1872

तिरू अरूट्प्रकास वल्ललार ने सच खुदा को जोति रूप देखा और अडिगलार भी जोति में शामिल हो गये । जाति प्रार्थना के वास्ते वडलूर में सत्य ज्ञान सबै” को वनाया । 1871, प्रसोर्पत्ति वर्ष, सबै बनाने के लिए आरंभ हुआ था 25.1.1872 प्रसोर्पत्ति वर्ष, तै महिने, 13 तारिख (पूसम) में पहला पहला प्रार्थना सब में हुआ था । सब लोग “अरूट्पेरूम्जोति” को देखकर आनन्द हुए । सत्य ज्ञान सब को कुदरती विवरण करके बताते हैं । अपने ही अन्दर जो देखने का अनुभव को बाहर भावना से दिखाना “सत्यज्ञानसब”। सात स्क्रीनों का तत्व अरूट्पेरूम्जोति का साम्ने होकर हम हो जोति दिखाई नहीं देता । अज्ञ्ज्ञान जाने से ही हम को अरूट्पेरूम्जोती का दर्शन मिलेगा । अडिगलार का अनुभव को ऐसा ही बाहर सबे को बनाकर रखा हुआ है । “तिरून्दुम येन उल्लत्तिरूक्कोइल ज्ञानसिदिपुरम येन सत्तियम कण्छेन,” “सत्य ज्ञानसबैयै येन्नुट्कण्डनन सन्मार्गसिध्दियै नाच पेट्रूक्कोण्डनन” ये सब अडिगलार ने हम को बताते है । (तिरूवाक्कुगल)

सन्मार्ग कोडि (झण्डा) 22.10.1873

पुराने जमाने में ज्ञानि लोग कोई अपने मार्ग का झन्डा (अलग से) प्रयोग नहीं किये । मगर अडिगलार ने एक झन्डा तेयार किया । इस्का नाम “सन्मार्गकोडि” है । “कोडि कट्टि कोण्डोमेन्रू सिन्नम मिडि” करके गाया था । (Yellow) पीला रंग और (White) सफेद रंग का होता है । 22.10.1873 मेट्टुक्कुप्पम सिध्दि वलागम में श्री मुग वर्ष, ऐप्पसि महिने 7 वाँ तारिख मंगलवार सुबह 8 बजे पहला पहला झनड बाध्कर, बहुत बडा भाषण किया । अडिगलार का आखिर भाषण “महोबदेसम” “पेरूबदेसम” कहते हैं ।

सिध्दि हुआ था 30.1.1874

सन्मार्ग का आखिर आदमी मरना नहीं । जो आदमी बिना मरकर लर्म्ब उम्र में रहता है, वही सन्मार्गी है । यह अडिगलार का उपदेश है । “येन मार्गम इरप्पोजिक्कुम सन्मार्गन्ताने” तुन्जाद निलैयोन्रू सुध्द सन्मार्ग सूजलिलुण्डव सोल्ललवन्रे ये अडिगलार का उमदेश है । अडिगलार सुध्द, प्रणव और ज्ञान देह को अरूटपेरून्जोति खुदा से ले लिया । जो तीनों देह सिध्दियाँ को लेते हैं उन्क छाया जमीन पर नहीं पर नहीं गिरेगा । वह वेलि के अरूल में मिन्गल हो जायेगा । वे खुद के साथ ही छुपजायेंगे । उन लोगों को दुसरा दबह जनन नहीं । यह जनन हैं आखिर जनन होगा । यही नित्य देह होगा । नित्य देह को लेकर एक “तैपूस दिन” में श्री मुग वर्ष, तै महिना, 19 वाँ तारिख 30.1.1874 (Friday) शुक्रवार रात 12 बज (15 नाजिगै) सिध्दि वलाग तिरू मालिगै में अपना कमरे के अन्दर जाकर दर्वाज को बन्के 2 ½ घडिगै में अरूट्पेरूम जोति के साथ मिलकर जोति हो गये ।

तिरूचिट्बलम